International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(2): 34-37
www.educationjournal.info
Received: 02-06-2023
Accepted: 09-08-2023

संतोष कुमार विश्वकर्मा
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी
प्राचार्य, कृष्णा कालेज ऑफ एजुकेशन, मनगवाँ, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
संतोष कुमार विश्वकर्मा
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सतना जिले के माध्यमिक षिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं में नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

संतोष कुमार विश्वकर्मा एवं डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं में नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध कार्य को सतना जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 माध्यमिक विद्यालय कुल 48 विद्यालयों से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 960 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन हेतु किया गया है। नैतिक मूल्य वास्तव में ऐसी सामाजिक अवधारणा है जिसका मूल्यांकन किया जा सकता है। यह कर्तव्य की आंतरिक भावना है और उन आचरण के प्रतिमानों का समन्वित रूप है जिसके आधार पर सत्य असत्य, अच्छा–बुरा, उचित–अनुचित का निर्णय किया जा सकता है और यह विवेक के बल से संचालित होती है। शोध के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है और इसी प्रकार छात्र और छात्राओं के नैतिक मूल्यों में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कूट शब्दः सतना जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, शहरी, ग्रामीण, छात्र–छात्राएँ, नैतिक मूल्य।

1. प्रस्तावना
मानव जीवन में सीखने की प्रक्रिया सार्वभौमिक एवं निरंतर होती है। भारतीय मान्यता के अनुसार शिक्षा शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के शिक्ष् धातु से हुई है। जिसका अर्थ है सीखना और सीखाना। शिक्षा के संबंध में महात्मा गॉधी ने कहा है, "शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जो बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा के सर्वोत्कृष्ट रूपों को प्रस्तुत कर दें।"
नैतिकता का सम्बंध मानवीय अभिवृत्ति से है, इसलिए शिक्षा से इसका महत्त्वपूर्ण अभिन्न व अटूट सम्बंध है। कौशलों व दक्षताओं की अपेक्षा अभिवृत्ति–मूलक प्रवृत्तियों के विकास में पर्यावरणीय घटकों का विशेष योगदान होता है। यदि बच्चों के परिवेश में नैतिकता के तत्त्व पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं तो परिवेश में जिन तत्त्वों की प्रधानता होगी वे जीवन का अंश बन जायेंगे। इसीलिए कहा जाता है कि मूल्य पढ़ाये नहीं जाते, अधिग्रहीत किये जाते हैं।
बच्चों में स्वस्थ विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए नैतिक मूल्यों को स्थापित करना आवश्यक है जो चरित्र निर्माण और वांछनीय सामाजिक व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए एक ठोस आधार स्थापित करें। इसके अलावा, ये सिद्धांत बच्चों को उनकी नैतिक निर्णय लेने की क्षमताओं को तेज करने में मदद करते हैं। बच्चों को नैतिक मूल्य सिखाने का महत्व निम्नलिखित है–
मजबूत चरित्र विकसित करता है – बच्चों में लचीले चरित्र विकसित करने के लिए नैतिक शिक्षा मौलिक है। ईमानदारी, जिम्मेदारी, सम्मान, दयालुता, साहस और दृढ़ता जैसे मूल्यों को सिखाकर हम उनके भीतर अखंडता के मजबूत सिद्धांतों को स्थापित कर सकते हैं जो अनिवार्य रूप से उन्हें अपने समुदायों में जिम्मेदार और विश्वसनीय वयस्क बनने की ओर ले जाएंगे।
सामाजिक कौशल को बढ़ावा देता है – नैतिक शिक्षा बच्चों की सामाजिक क्षमताओं को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब बच्चे अच्छे नैतिक मूल्य सीखते हैं तो वे विविधता के प्रति सम्मान दिखाते हुए दूसरों के साथ सकारात्मक बातचीत करने में माहिर हो जाते हैं। इसके अलावा, उन्हें करुणा सिखाने से उन्हें आपसी विश्वास पर आधारित मजबूत संबंध विकसित करने में मदद मिलती है।
नैतिक निर्णय लेने में मदद करता है – यदि हम चाहते हैं कि हमारे निर्णय हमारे भविष्य को आकार दें तो चरित्र शिक्षा आवश्यक है। बच्चों को अच्छे नैतिक निर्णय लेने के लिए उन्हें एक ऐसे ढांचे से सुसज्जित किया जाना चाहिए जिससे वे मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। अपने युवाओं में मजबूत नैतिक मूल्यों को स्थापित करके हम उन्हें उसी ढांचे के साथ सशक्त बनाते हैं – जिससे वे आत्मविश्वास और अखंडता के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना कर सकें।
आत्म–सम्मान बनाता है – आत्म–सम्मान और आत्मविश्वास विकसित करना चरित्र विकास की आधारशिला है। बच्चों को नैतिक मूल्यों का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करना इस आवश्यक गुण के निर्माण के लिए एक मजबूत आधार के रूप में कार्य करता है। अपने स्वयं के निर्णय पर भरोसा करके वे स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता प्राप्त करते हैं जो उन्हें जीवन में आने वाली चुनौतियों

से निपटने में मदद करती हैं।

एक सफल भविष्य के लिए तैयारी – उपलब्धि का एक रोडमैप– नैतिक मूल्यों पर आधारित एक मजबूत नींव का निर्माण बच्चों को महत्वपूर्ण कौशल के साथ सशक्त बनाता है जो सफल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है। लचीलापन, प्रयास और उद्देश्य जैसे गुण उन्हें असफलताओं के बावजूद आगे बढ़ने में मदद करते हैं और साथ ही अच्छे विकल्पों को बढ़ावा देते हैं जो कैरियर के विकास और व्यक्तिगत पूर्ति दोनों पर स्थायी प्रभाव डालते हैं।

नैतिक मूल्य सामाजिक और नैतिक स्थितियों में व्यवहार और विकल्पों की नींव प्रदान करते हैं। मनुष्य के रूप में, हम ईमानदारी, सम्मान, जिम्मेदारी, करुणा, निष्पक्षता, वफादारी, साहस, क्षमा, कृतज्ञता, उदारता, दृढ़ता, सहानुभूति सहिष्णुता की सराहना करते हैं जो हमें सूचित नैतिक निर्णय लेते समय अपने आस–पास के लोगों के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाने में सक्षम बनाता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल सतना जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छज्ञ–छात्राओं के नैतिक मूल्यों के प्रभाव का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। वास्तव में, नैतिक गुणों की कोई एक पूर्ण सूची तैयार नहीं की जा सकती, तथापि संक्षेप में हम इतना कह सकते हैं कि हम उन गुणों को नैतिक कह सकते हैं जो व्यक्ति के स्वयं के, सर्वांगीण विकास और कल्याण में योगदान देने के साथ–साथ किसी अन्य के विकास और कल्याण में किसी प्रकार की बाधा न पहुंचाए. विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि नैतिक मूल्यों की जननी नैतिकता सद्गुणों का समन्वय मात्र नहीं है, अपितु यह एक व्यापक गुण है जिसका प्रभाव मनुष्य के समस्त क्रिया–कलापों पर होता है और सम्पूर्ण व्यक्तित्व इससे प्रभावित होता है। वास्तव में नैतिक मूल्य/नैतिकता आचरण की संहिता है। हमें इस बात को भली भांति समझना होगा कि नैतिक मूल्य नितांत वैयक्तिक होते हैं। अपने प्रस्फुटन उन्नयन व क्रियान्वय से यह क्रमशः सामाजिक व सार्वभौमिक होते जाते हैं।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा सतर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यो का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

एम. वर्मा के अनुसार – ''परिकल्पना किसी सिद्धांत का वह रूप है जिसे एक परीक्षण योग्य तर्क साध्य के रूप में लिखते हैं और जिसकी स्पष्ट रूप में प्रदत्तों के आधार पर या प्रयोगात्मक निरीक्षणों के आधार पर पुष्टि की जा सकती है।''

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा सतर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यो में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना, (सुहावल), चित्रकूट (मझगवाँ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन तक परिसीमन किया गया है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

1. **सर्वेक्षण विधि –** प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।
2. **सांख्यिकी विधि –** प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु प्रमापीकृत शोध उपकरण एल.एन. दुबे द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य प्रपत्र प्रयुक्त किए गए है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित सतना जिले के जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 विद्यालय कुल 48 विद्यालयों से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 960 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक शिक्षा सतर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यो की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कपिल, एच.के. (1996)[2], शर्मा, आर.ए. (1995)[3], शर्मा, आर.के. व दुबे, श्रीकृष्ण (2007)[4], कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार

(2021)[5], अवस्थी, पूनम एवं खरे, ज्योत्सना (2018)[6], झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2020)[7], बाजपेयी, आशीष, श्रीवास्तव, अर्चना एवं पाठक, स्वाति (2013)[8]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 7424 वर्ग कि.मी. है जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.78 प्रतिशत है। सतना मध्य रेल्वे के इलाहाबाद और कटनी जंक्शन के बीच एक प्रमुख रेल्वे स्टेशन एवं व्यापारिक, औद्योगिक नगर है। जिले में एक नगर निगम (सतना), एक नगरपालिका (मैहर) के अतिरिक्त 9 नगर पंचायते क्रमषः नागौद, अमरपाटन, रामपुर बघेलान, कोठी, जैतवारा, कोटर, विरसिंहपुर, उचेहरा एवं चित्रकूट हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : "शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 1 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		शहरी	ग्रामीण
समूह की संख्या (N)		480	480
मध्यमान (M)		61.19	61.00
मानक विचलन (SD)		15.74	15.79
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		0.18	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

df = (N1-1) + (N2-1)
df = (480-1) + (480-1) = 479 + 479 = 958

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थकता का औसत मध्यमान 61.19 है तथा मानक विचलन 15.74 है और ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थकता का औसत मध्यमान 61.00 है तथा मानक विचलन 15.79 है।

958 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 0.18 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

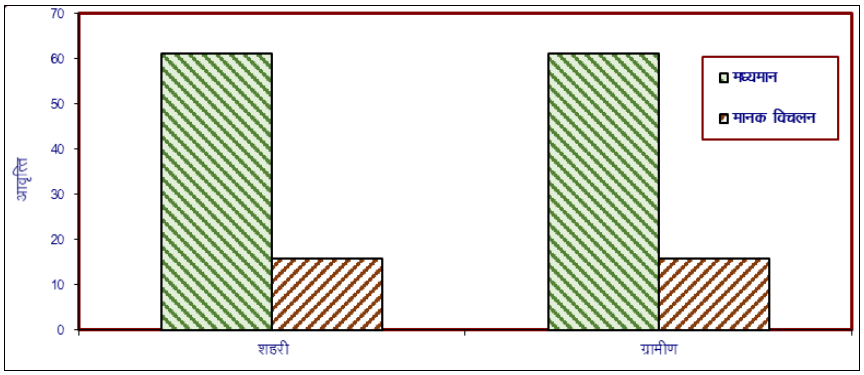

आरेख 1 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

परिकल्पना क्र. – 2 : "शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा सतर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यो में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा सतर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यो का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		480	480
मध्यमान (M)		59.15	61.19
मानक विचलन (SD)		15.89	14.90
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		2.05	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

df = (N1-1) + (N2-1)
df = (480-1) + (480-1) = 479 + 479 = 958

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा सतर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यो से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा सतर पर अध्ययनरत छात्रों के नैतिक मूल्यो में सार्थकता का औसत मध्यमान 59.15 है तथा मानक विचलन 15.89 है और छात्राओं के नैतिक मूल्यो में सार्थकता का औसत मध्यमान 61.19 है तथा मानक विचलन 14.90 है।

958 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 2.05 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा सतर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यो में कोई सार्थक अन्तर नही है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

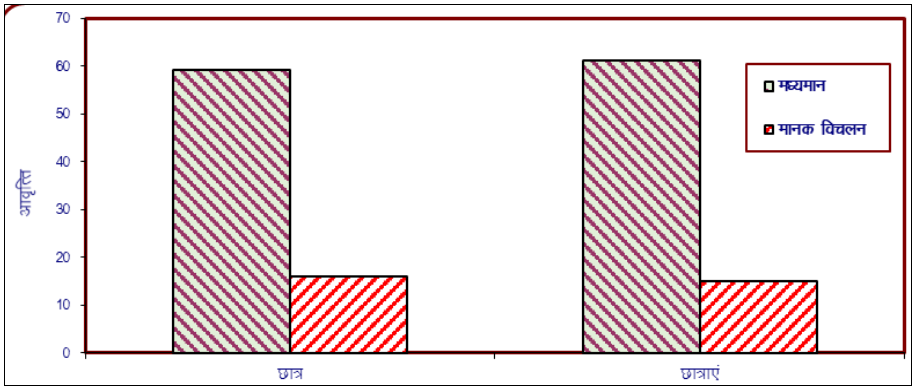

आरेख 2 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा सतर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यो का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष

शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थकता का औसत मध्यमान 61. 19 है तथा मानक विचलन 15.74 है और ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थकता का औसत मध्यमान 61.00 है तथा मानक विचलन 15.79 है।

शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा सतर पर अध्ययनरत छात्रों के नैतिक मूल्यो में सार्थकता का औसत मध्यमान 59.15 है तथा मानक विचलन 15.89 है और छात्राओं के नैतिक मूल्यो में सार्थकता का औसत मध्यमान 61.19 है तथा मानक विचलन 14. 90 है।

शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है और इसी प्रकार छात्र और छात्राओं के नैतिक मूल्यों में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. शर्मा, आर.ए. (1995): मानव मूल्य एवं शिक्षा, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ.
4. शर्मा, आर.के. व दुबे, श्रीकृष्ण (2007) : मूल्यों का शिक्षण, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा.
5. कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमारः सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research. 2021;7(1):400-403.
6. अवस्थी, पूनम एवं खरे, ज्योत्सना (2018) : ''माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'', इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमन रिसोर्स एण्ड सोशल साइंस, वॉल्युम 5, इश्यु 3, मार्च 2018, पेज नम्बर 680–683.
7- झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार, सतना जिले के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Academic Studies. 2020;2(3):369-372.
8. बाजपेयी, आशीष, श्रीवास्तव, अर्चना एवं पाठक, स्वाति (2013) : ''माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'', सामाजिक शोध योजना, वॉल्यूम 1, अंक 2, वर्ष 1, जनवरी 2013, पेज नम्बर 45–50.